हिम की बूंदे

प्रिया देवांगन

ठंडी-ठंडी सी पुरवाई, दस्तक दे चहुंओर।
श्वेत वस्त्र धारण की धरती, हुई सुहानी भोर।।

दृश्य देख धुंधला-धुंधला सा,खींचे लंबी श्वास।
ठंड गुलाबी रोम-रोम में,पल जीवन में खास।।

सूर्य लालिमा तारापथ से, फैलाती आलोक।
गर्म ताप अरु देह छुए गर, हम पाते ना रोक।।

सौम्य भरी ये हिम की बूंदें, करते पत्रक स्नान।
मोती जैसे चमके सारे, आकर्षित कर ध्यान।।

धरा समाहित हो जाती हैं,बरसे अंबर शीत।
नई कोपलें विकसित करतीं, और बढ़ातीं मीत।।